Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 4, Issue 1 - 2019

पिछले जन्मों को जानने की विधि

श्री लालसिंह*

शोधसार

जन्म वास्तव में है क्या, क्या यह एक प्रक्रिया है जो चलती ही रहती है, जन्म के बाद फिर जन्म आते ही रहते हैं। पिछले जन्मों के इतिहास को जानना व्यक्ति के लिए बहुत ही आवश्यक है क्यूंकि अगर कोई घटना इस जन्म में हुई है तो उसका कारण क्या है, एक व्यक्ति राजा और दूसरा रंक क्यूँ होता है, कहीं ऐसा तो नहीं की इतिहासकार केवल पदार्थ तक ही इतिहास को समझने में कामयाब हुए और उन्होंने इसके आगे विचार ही नहीं किया की इतिहास पदार्थ से आगे भी हो सकता है। इतिहासकारों को अब इतिहास लिखने के लिए एक नयी सर्वोच्च कला को जन्म देना होगा। इतिहास केवल एक जन्म तक ही सिमित नहीं होना चाहिए बल्कि सभी जन्मों की जानकारी एकत्रित करना और उसके आधार पर वर्तमान जन्म का विश्लेषण होना चाहिए। यह पूरी की पूरी शोध पिछले जन्मों को जानने की विधि तथा उसके शाक्षों पर आधारित है, इसका लाभ सभी व्यक्तिओं तथा समाज को मिलेगा, जब व्यक्ति अपने पिछले जन्मों के सभी शाक्षों को जान लेगा तो उसका वर्तमान जीवन सही दिशा की और अग्रसर होगा।

मूलशब्द: योग, स्वांस, मन, शांति, आत्मा, बोध।

प्रस्तावना

व्यक्ति अपने आस-पास के संसार को ध्यान से देखे और यह समझने का प्रयास करे की क्या वास्तव में हर व्यक्ति खुश है या नहीं, अगर व्यक्ति खुश नहीं है तो यक़ीनन हमारे इतिहासकारों द्वारा जो इतिहास लिखा गया है इसके लिखने में कोई भूल हुई है क्यूंकि इतना सब कुछ लिखा गया है परन्तु फिर भी कोई उससे कुछ सीख क्यूँ नहीं रहा है, अगर सीख भी रहे है तो सब गलत ही सिख रहे है। हर तरफ एक व्यक्ति से लेकर संसार तक सभी परेशान हैं इसका मुख्य कारण यह है की व्यक्ति दुसरे के इतिहास से सीखना चाहता है, जबकि सत्य यह है की व्यक्ति केवल अपने इतिहास से अत्यधिक सीखता है जबकी दुसरे के इतिहास से केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है, और पूरा विश्व दूसरे के इतिहास के आधार पर ही अपने निर्णय ले कर दुखी होता है।

हर एक व्यक्ति का अपना-अपना इतिहास होना चाहिए, कहने में तो यह बहुत ही अजीब जान पड़ता है पर एक व्यक्ति अपने बारे में जानता ही कितना है। जन्म की पहली स्वांस से अधिकतम 100 वर्ष तक का उसका जीवन होता है और इतना कम समय इतिहास में कुछ भी नहीं होता, इसीलिए इस सर्वोच्च कला के द्वारा व्यक्ति न सिर्फ अपने एक ही जन्म का इतिहास जान सकेगा बल्कि पिछले सारे जन्मो के इतिहास की ख़ोज कर सकेगा।

*सहायक आचार्य, राष्ट्रीय फैशन टेक्नोलॉजी संस्थान, रायबरेली, उत्तर प्रदेश भारत 229010.
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

प्रश्न यह है की एक व्यक्ति का इतिहास केसा होना चाहिए, क्या वह सिर्फ कुछ सालों का या एक ही जीवन का होना चाहिए या उसके सभी जन्मों का इतिहास होना चाहिए, सत्य तो यह है की मनुष्य जो कुछ भी अपने इस जीवन में होता है वह उसके पिछले जन्मों के इतिहास का ही परिणाम होता है। संसार में केवल दो ही रास्ते हैं जिनके द्वारा लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है व्यक्तिपरक और वस्तुपरक। व्यक्तिपरक और वस्तुपरक दोनों ही उच्च कोटी के विज्ञान है परन्तु दोनों में बहुत गहरा भेद है। व्यक्तिपरक विज्ञान के द्वारा व्यक्ति स्वंय (तत्त्व) की खोज करता है जबकि वस्तुपरक विज्ञान के द्वारा व्यक्ति वस्तु (पदार्थ) की खोज करता है।

पश्चिमी इतिहास अभी तक केवल वस्तुपरक विज्ञान (पदार्थ) की खोज करता रहा है और उसी के शाक्षों पर इतिहासकरों ने अभी तक का इतिहास लिखा है, पदार्थ और शाक्ष हर तरफ फेले पड़े हैं परन्तु उन्हें एकत्र करने के बाद उसका मिलान करना आसान कार्य नहीं है और अगर मिलान कर भी लिया जाता है तो भी वह केवल अनुमान ही होता है की उस काल में वह घटना शायद इस लिए या उस लिए हुई होगी। यही कारण है की पूरा संसार अनुमानों के आधार पर निर्णय ले रहा है और परेशानियों का सामना कर रहा है।

इतिहास लिखने की एक और पहल होनी चाहिए और यह पहल व्यक्तिपरक विज्ञान के द्वारा पूरी हो सकती है। जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने पूर्ण इतिहास को जान सकेगा और अपने जीवन से संबंधित सही निर्णय ले सकेगा। इस तत्त्व विज्ञान के माध्यम से मनुष्य न केवल अपने एक जन्म का इतिहास जान सकेगा बल्कि सारे जन्मो का इतिहास जान सकेगा। व्यक्तिपरक विज्ञान की सहायता से मनुष्य के निर्णय उसके अपने इतिहास पर लिए गए होंगे न की किसी और के इतिहास पर लिए गए, इसका परिणाम यह होगा की समाज में प्रति दिन जो असामाजिक तत्त्व और अशांति फेल रही ही उसके कारणों को जान सकेगा और वह अपने आप को ऐसे तत्वों में लिप्त न होने दे उसके लिए सही निर्णय ले सकेगा।

अब प्रश्न यह उठता हे की क्या यह संभव है की कोई मनुष्य अपने सभी जन्मो के इतिहास को जान सकता है या नहीं, हम इतिहास में ऐसे अनेक व्यक्तियों के नाम खोज सकते हैं जिन्होंने अपने पिछले जन्मों को जाना और उसके उपरांत उनके जीवन में बहुत अधिक परिवर्तन हुए तथा अपने पिछले जन्मो के अनुभवों के कारण अपने वर्तमान जीवन में उन्होंने उचित निर्णय लिए तथा उसका लाभ उठाया इसके अलावा समाज में भी उनका योगदान शराहनीय रहा है।

भारतीय इतिहास में कहानियों का बहुत ही अधिक महत्व है खासतोर पर पौराणिक कथाओं का, दशावतार की कथाएं इन्ही में से एक है और इनमे विष्णु के दस जन्मों की कहानियां हैं जो आपस में जुडी हुई हैं इसके अलावा जातक कथाओं में बौध्द के पिछले जीवन की 547 कथाएं हैं जिनका महत्व बौद्ध धर्म में काफी लोकप्रिय है, अगर बौध्द अपने पिछले जन्मो का इतिहास बताने में कामयाब हो गए थे तो क्या यह मुमकिन है की उसी तकनीक का सहारा लेकर पिछले हजारों वर्षों का व्यक्ति इतिहास लिख सके। यह इतिहास लेखन की सर्वोच्च कला उसी तकनीक की खौज करेगी जिस तकनीक के माध्यम से जातक कथाएं बुद्ध द्वारा कही गयी थी। ऐसा नहीं है की ऐसा पहली बार सिर्फ बौध्द ने ही कर के दिखाया है इनके अलावा भी बहुत से ऐसे पात्र इतिहास में हुए हैं जिन्होंने अपने पिछले जन्मो को जाना है। यह प्रक्रिया कोई आसान कार्य नहीं है हो सकता है की इतिहास को समझने के लिए बहुत सी यौगिक पद्धतियों का सहारा लेना पड़े या हमें गीता के कुछ अध्यायों का वास्तविक प्रयोग कर के देखना पड़े या पंतजली के योग का सहारा लेना पड़े।

विज्ञान से भी ऊपर का एक और विज्ञानं है जिसे अवचेतन मन का विज्ञानं कहा जाता है जिसका उपयोग बौध्द से लेकर सभी महान योगिओं ने किया था, अगर इस अवचेतन विज्ञानं की खोज का प्रयोग

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-3501**

इतिहास लिखने में किया जाये तो हो सकता है की इतिहासकारों द्वारा समग्र इतिहास लिखा जा सके। इतिहास के लिए यह एक नया और अद्भुत रास्ता होगा जिसके माध्यम से इतिहासकार क्यूँ-या कोई घटना क्यूँ हुई जेसे प्रश्न का उत्तर खोजने में कामयाब हो सकते हैं, अभी तक इतिहासकार केवल यही जान पाये है की कोई घटना केसे होती है, कोई घटना क्यूँ होती है इसका कोई उत्तर नहीं है। यह पूरा अनुसंधान इतिहास में क्यूँ को खोजने का अनुसंधान है|

प्राचीन इतिहास न केवल राजामहाराजाओं-, समाजों, संस्कृतियों और धर्मों आदि के बारे में बात करता है, बल्कि इसके अलावा इसमें बहुत सारी जानकारीयां भी उपलब्ध है। दूसरी शताब्दी ई.पू. के पंतजलि ने पुनर्जन्म के बारे में बात की है, उन्होंने पिछले जीवन को प्रथाकहा ("रिवर्स जन्म" शब्दशः) प्रसाद-है । पंतजलि की योग की बहुत सी तकनीकों में से कुछ तकनीकों का इस्तमाल कर के पिछले जन्म से सम्बंधित जान्कारियों को एकत्रित किया जा सकता है। फ्रांसीसी शिक्षक एलन कार्देक (Allan Kardec) ने अप्रैल 18, 1885 को द स्पिरिट्स बुक (The Spirits' Book) प्रकाशित की, उन्होंने प्रेतवाद के बारे में बात की और इसके अलावा उन्होंने अपनी शोध के दौरान उन्होंने कई आत्माओं के साथ बातचीत की हालाकि बातचीत का तरीका आम तरीका नहीं था।

उद्देश्य

इस संसार में सभी व्यक्तियों के अपने-अपने प्रश्नों के अथाह भण्डार हैं और वे उन प्रश्नों के उत्तर खोजने की खोज में अपना सारा जीवन बिता देता है। इन प्रश्नों के उत्तर न मिलने के कारण हर व्यक्ति परेशान रहता है, कुछ व्यक्तियों की परेशानी कम और कुछ व्यक्तियों की परेशानी ज्यादा हो सकती है लेकिन सभी मानव अपने-अपने प्रश्नों की गठरी लेकर जीवन का सफ़र तय करते है।

संसार में कोई भी प्रश्न बिना उत्तर के जीवित नहीं रह सकता, केवल उस उत्तर को खोजने का रास्ता व्यक्ति को पता होना चाहिए। इतिहासकार वास्तव में करता क्या है, जो भी आज हमारे आस पास मौजूद है उन प्रश्नों का उत्तर खोजकर हमारे सामने रखता है परन्तु हम यह नहीं कह सकते की जो भी उत्तर हमारे सामने रखे गए है वे वास्तव में कितने सही है। अगर सभी उत्तर सही है तो मनुष्य इतिहास के इतने सारे उत्तरों से कुछ सीखता क्यूँ नहीं है, और अब हम अगर समाज को देखे तो दिन-ब-दिन गंगा-यमुना नदियों की तरह मैला होता जा रहा है। इसका मुख्य कारण यह है की हर व्यक्ति के प्रश्न अलग हैं और उत्तर भी अलग हैं, किन्तु मनुष्य के प्रश्न तो अपने हैं और उत्तर किसी और के लेकर समाधान करना चाहते हैं जो की असंभव है। इतिहासकार होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य है की हर व्यक्ति अपने एतिहासिक प्रश्नों के उत्तर खुद खोजे, जब तक वह अपने प्रश्नों के उत्तर नहीं खोजेगा तब तक वह सुख को प्राप्त नहीं होगा।

इस शोध के कुछ उद्देश्य हैं जिनका मनुष्य के जीवन में बहुत महत्त्व है जैसे :-

1. व्यक्ति के स्वंम (आत्मपरक) की खोज
2. पिछले जन्मों के इतिहास को जानने का मार्ग

परिकल्पना

शोधकर्ता वास्तव में करना क्या चाहता है यह बहुत ही विचारणीय है, क्यूंकि वह वास्तव में इतिहासकारों तथा समाज के विवेकशील व्यक्तियों का ध्यान समाज की एक ऐसी समस्या की और केन्द्रित करना चाहता है जिसका समाधान होने से समाज में बहुत सी परेशानियों का हल हो जायेगा। वास्तव में जब भी कोई समस्या दिखती है तो वह एक व्यक्ति की पहले होती है और बाद में वह एक सामाजिक रूप धारण करती है। इतिहास इन समश्याओं को दूर करने में बहुत अहम् भूमिका निभाता आ रहा है किन्तु एक भूल भी हजारों सालों से होती आ रही है, इतिहास समाज की समस्याओं को सुलझाने का प्रयत्न कर रहा है जबकि समस्या समाज की कम और व्यक्तियों की अधिक है, अभी तक जितना भी इतिहास लिखा गया है वह राजा महाराजाओं, समाजों

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

और देशों का लिखा गया है जबकि इतिहास व्यक्तिओं का होना चाहिए या हम कह सकते हैं की हर व्यक्ति का अपना निजी इतिहास होना चाहिए जिससे की वह अपनी समस्यायों का हल खोज सके, यह इतिहास एक जन्म या फिर उसके बहुत से जन्मो का इतिहास हो सकता है। शोधकर्ता ने हर व्यक्ति के अपने निजी इतिहास को जानने पर जोर दिया है। उसकी परिकल्पना एक ऐसे तत्व की खोज करने की है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपना समग्र इतिहास जान सके। समाज में शोधकर्ता की यह परिकल्पना शायद कभी न कभी समाज में बहुत से बदलाव करने में सक्षम हो। यह व्यक्तिगत परिकल्पना इतिहास लिखने और उसे समझने में नए रास्तो का निर्माण करेगी।

कार्य और कार्यप्रणाली की योजना

शोधकर्ता इस शोध में प्रयोगसिद्ध (Empirical) कार्यप्रणाली के माध्यम से अपने मार्ग की खोज करेगा। इस शोध का अध्ययन साहित्यों पर आधारित होगा, और इसके अलावा, दार्शनिक विचारों का अध्यन, तत्वमीमांसा, ध्यान और पिछले जन्म के ऐतिहासिक श्रोतों के अध्ययनो का विश्लेषण होगा।

साहित्य की समीक्षा

जातक कथा

जातक शब्द का अर्थ होता है, बुद्ध के पूर्व जन्म संबंधी कथाएं। जातक कथाएं त्रिपिटक के सुत्तपिटक के अंतर्गत खुद्दकनिकाय का दशवा भाग है। जातक की गाथाओं की प्राचीनता निर्विवाद है और ये 547 जातक कथाएं बुद्ध के पिछले जन्मों की कहानियां हैं। इसमें न सिर्फ मानव जीवन की बल्कि अन्य जंतुओं में भी लिए गए पिछले जन्मों की कथाएं भी हैं। जातकों का यह विषय आज भी विचारणीय है की आखिर बुद्ध ऐसी कोन सी कला जानते थे की जिसके माध्यम से वह अपने पिछले जन्मो के बारे में बताने में सक्षम हुए

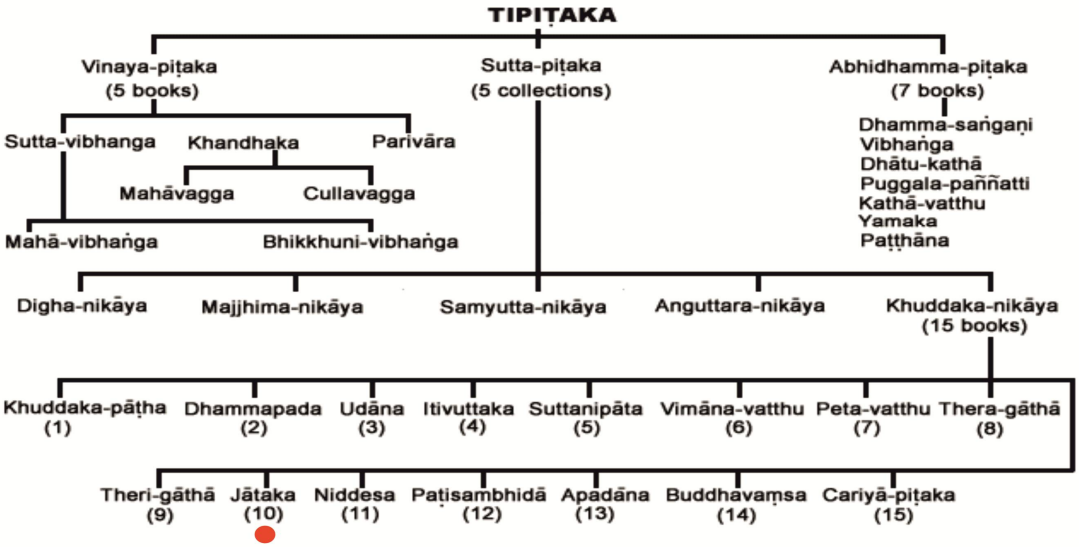

भविष्य पुराण

भविष्य पुराण-पृष्ट-126 -यमदूत और नारकीय जिवोंके संवादके प्रसंगमें सूर्य मंदिर में दीपदान करने एवं दीप चुराने के पुण्य पापों का परिणाम

यह शारीर थोड़े ही दिनों तक रहने वाला है, विषय भी नाशवान है यह कोन नहीं जानता। हजारों जन्मो के बाद एक बार मनुष्य जन्म मिलता है, उसमे क्यूँ मूढजन भोगोंकी और दोड़ते हैं। ये पुत्र, स्त्री, गृह क्षेत्र आदि के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, और उनमे आशक्त होकर अनेक दुष्कर्म करते हैं, वे मूढजन अपना हित नहीं जानते, वे यह भी नहीं जानते की सूर्य, चन्द्र, काल तथा आत्मा ये सभी मनुष्य के सुभ और असुभ कर्मोंको देखते रहते हे, अर्थात शाक्षिभूत हे, न केवल एक जन्म अपितु सेकड़ों

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

जन्मों में पुत्र, स्त्री आदि के लिए जो-जो भी कर्म किया है उसे अच्छी तरह से ये जानते रहते है।

भविष्य पुराण-पृष्ट-144 -भगवान् व्यासद्वारा योग-ज्ञानका वर्णन

प्राणायाम से शारीरिक दोष, धारणा से पुर्व्जन्मार्जित तथा वर्तमान के सभी पाप, प्रत्याहार से संसर्गजनित दोष एवं ध्यान से जेविक दोशोंका त्याग कर ईश्वरीय गुणों को प्राप्त करना चाहिए|

भविष्य पुराण-पृष्ट-290-जातिस्मर-भद्रव्रत का फल और विधान तथा स्वर्नष्ठिविकी कथा

एक ही वर्ष में मार्गशीर्ष, फाल्गुन, ज्येष्ठ, एवं भाद्रपद, क्रमशः इन चार मासों में भद्रव्रत का श्रद्धापूर्वक उपवास करने से मनुष्य को अपने पूर्वजन्म का स्मरण हो जाता हे|

भविष्य पुराण-पृष्ट-333-दशावतार व्रत की कथा, विधान और फल

भृगु ने भगवान विष्णु को शाप दिया की तुम दश बार मनुष्य लोक में जन्म लोगे|

विष्णु पुराण

दुतीय अंश-पहला अध्याय-पृष्ट-105-प्रियव्रत के वंश का वर्णन

प्रियव्रत के पुत्र अपने बल पराक्रम के कारण विख्यात थे। उनमें महाभाग मेधा, अग्निबाहु और पुत्र, ये तीन योगपरायण तथा अपने पूर्वजन्म का वृतांत जानने वाले थे।

दुतीय अंश-तेरहवाँ अध्याय-पृष्ट-149-भरत चरित्र

उस समय की सुद्रढ़ भावना के कारण वह जम्मुमार्ग के घौर वन में अपने पूर्व जन्म की स्मृति से युक्त एक मृग हुआ। अपने पूर्व जन्म का स्मरण रहने के कारण वह संसार से उपरत हो गया और अपनी माता को छोड़कर फिर शालग्राम क्षेत्र में आकर रहने लगा। वहां सूखे घासफूस और पत्तों से ही अपना शारीर पोषण करता हुआ वह अपने मृगत्व-प्राप्ति के हेतुभूत कर्मों का निराकरण करने लगा। तदन्तर, उस शारीर को छोड़कर उसने सदाचार संपन्न योगिओं के पवित्र कुल में ब्राह्मण जन्म ग्रहण किया। उस देह में भी उसे अपने पूर्वजन्म का स्मरण बना रहा।

दुतीय अंश-तेरहवाँ अध्याय-पृष्ट-150-भरत चरित्र

इस प्रकार बेगार में पकडे जाकर अपने पूर्व जन्म का स्मरण रखने वाले संम्पूर्ण विज्ञानं के एकमात्र पात्र वे विप्रवर अपने पापमय प्रारब्ध का क्षय करने के लिए उस शिबिका को उठाकर चलने लगे।

तृतीय अंश-अठारहवां अध्याय-पृष्ट-218-मायामोह और असुरों का संवाद तथा राजा सतधनु की कथा

(राजा सतधनु की कथा में कई जन्मों की कथा है) प्रष्ट-223-हे राजेंद्र स्वान यौनी में जन्म लेने पर मेने आपसे जो पाखंड से वार्तालाप विषयक पूर्वजन्म का वृतांत कहा था क्या वह आपको स्मरण है ?

चतुर्थ अंश-चौदहवां अध्याय-पृष्ट-282-अनमित्र ओर अन्धक के वंश का वर्णन

उससे शिशुपाल का जन्म हुआ पूर्वजन्म में यह अतिशय पराक्रमी हिरण्यकशिपु नामक देत्यों का मूल पुरूष हुआ था जिसे सकल लोकगुरु भगवान् नृसिंह ने मारा था। तदन्तर वह अक्षय, वीर्य, शोर्य, सम्पत्ति और पराक्रम आदि गुणों से सम्पन्न तथा समस्त त्रिभुवन के स्वामी इंद्र के भी प्रभाव को वह बहुत समय तक भोगते हुए अंत में राघव रूपधारी भगवान् के ही द्वारा मारा गया। उसके पीछे यह चेदिराज दमघोष का पुत्र शिशुपाल हुआ

चतुर्थ अंश-पंद्रहवां अध्याय-पृष्ट-283-शिशुपाल के पूर्व जन्मान्तरों का तथा वासुदेवजी की संतति का वर्णन

पूर्वजन्मों में हिरण्यकशिपु और रावण होने पर इस शिशुपाल ने भगवान् विष्णु के द्वारा मारे जाने से देव दुर्लभ भोगों को तो प्राप्त किया, किन्तु यह उनमें लीन नहीं हुआ, फिर इस जन्म में ही उनके द्वारा मारे जाने पर इसने सनातन पुरुष श्री हरि में सायुज्य मौक्ष कैसे प्राप्त किया।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

पंचम अंश-चौबीसवां अध्याय-पृष्ट-377-मुचुकुन्द का तपस्या के लिए प्रस्थान और बलराम जी की ब्रज यात्रा

तुम अपने अभिमत दिव्य लोकों को जाओ, मेरी कृपा से तुम्हे अव्याहत परम एश्वर्य प्राप्त होगा। वहां अत्यंत दिव्य भोगों को भोगकर तुम अंत में एक महान कुल में जन्म लोगे, उस समय तुम्हे अपने पूर्व जन्म का स्मरण रहेगा और फिर मेरी कृपा से तुम मोक्ष पद प्राप्त करोगे।

षष्ठ अंश-आठवां अध्याय-पृष्ट-456-शिष्य परंपरा, महात्म और उपसंहार

(पूर्व जन्म में सारस्वत के मुख से सुना हुआ यह पुराण) पुलस्त्य जी के वरदान से मुझे भी स्मरण रह गया, सो मेने ज्यों का त्यों तुम्हे सुना दिया। अब तुम भी कलियुग के अंत में इसे शिनीक को सुनाओगे।

पांतजल योगसूत्र

अपने पिछले जन्मों के इतिहास को जानने का एक मार्ग योग भी है, योग के माध्यम से हम अपने पिछले जन्मों की जानकारी प्राप्त कर के उसे इतिहास के रूप में लिख सकते है। ऐसे इतिहास की प्रमाणिकता उस व्यक्ति के लिए अपने वर्तमान जीवन में बहुत अधिक महत्ता होगी, और वह अपने इस जीवन में सही निर्णय ले सकेगा। आत्म तत्त्व को जानने का योग एक उत्तम विज्ञान है, पंतजलि चित्त की वृतियों के निरोध को ही योग कहते हैं क्यूंकि इनके पूर्ण निरोध से आत्मा अपने स्वरुप में स्थित हो जाती है। यह योग दर्शन अपने आप में पूर्ण सार्वभौम एवं वैज्ञानिक है। पांतजल योगसूत्र में 195 सूत्र हैं और इन्मे से अधिकतम में आत्मा(आत्मपरक) को जानने की बात कही गई है तथा आत्मा तक पहुँचने के मार्ग के बारे में बताया गया है। अगर व्यक्ति एक बार आत्म तत्व को जान लेगा तो वह अपने पूर्व जन्मों को जानने में सक्षम होगा। पांतजल योगसूत्र में चार अध्याय हैं, इन चारों अध्यायों में बहुत से सूत्र हैं जिनमें पिछले जन्मों तथा आत्मा को जानने की विधि बताई गयी है, परन्तु यहाँ पर कुछ सुत्रों का ही अध्ययन किया गया है। निचे दिए गए सूत्रों के अध्ययन से तथा उसके उपयोग से हम अपने पूर्व जन्मों को जान सकते हैं।

समाधि पाद

सूत्र 3-तदा द्रष्टुः स्वरुपेअवस्थनम्।

अनुवाद-उस समय दृष्टा (आत्मा) की अपने रूप में स्थिति हो जाती है

व्याख्या-आत्मा चैतन्य है। इसमें आत्मा अपने स्वरुप में स्थित हो जाती है, जो उसका शुद्ध रूप है।

सूत्र 20-श्रद्धावीर्यस्मृतिसमाधिप्रज्ञापूर्वक इतरेषाम।

अनुवाद-विदेह और प्रकृतिलयों से भिन्न योगिओं को श्रध्दा, वीर्य, स्मृति, समाधि और प्रज्ञा आदि उपायों से असम्प्रज्ञात समाधि सिद्ध होती है।

व्याख्या-बिना श्रद्धा के योगसाधना असंभव है। इसके फलस्वरूप योगी को समाधि लाभ होता है तथा समाधि में ही आत्मज्ञान होता है।

सूत्र 29-ततः प्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यन्तराया भावश्च।

अनुवाद-उक्त साधन से विध्नों का आभाव और अंतरात्मा के स्वरूप का ज्ञान भी हो जाता है

व्याख्या-आत्मा जब अपने स्वरुप में स्थित हो जाती है तो सभी साधन समाप्त हो जाते हैं। यही मंजिल है जहां पहुंचना है। पंतजलि ने इसी को ईश्वर कहा है।

साधन पाद

सूत्र 12-क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः।

अनुवाद-वर्तमान और भावी जन्मों में भोगने योग्य कर्मों की वासनाओं (कर्म संस्कारों का समुदाय) का मूल क्लेश है।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

व्याख्या-इस प्रकार अनेक जन्मों में किये गए कर्मों से उन संस्कारों का समुदाय बन जाता है। प्रत्येक कर्म का फल अवश्य होता है। कोई भी क्रिया ऐसी नहीं है जिसकी प्रतिक्रिया न हो। यही उसका फल है जो कर्म वाद के सिधांत को सिद्ध करता है। इस कर्म समुदाय का क्षय भोगे बिना नहीं होता। जितने कर्म संचित हैं उनमें से थोड़े से ही मनुष्य एक जन्म में भोगता है शेष अगले जन्मों में भोगने के लिए सुरक्षित रहते हैं किंतु उनका विनाश कभी नहीं होता॥ इस जन्म में जो फल भोग रहे हैं वे आवश्यक नहीं कि इससे पहले के जन्म के ही कर्म है। इससे पहले के कई जन्मों पूर्व के भी हो सकते हैं। फिर इस जन्म में जो भी अच्छे-बुरे कर्म किए गए हैं वे भी संस्कार बनते हैं जिन्हें अगले जन्मों में भोगना ही पड़ेगा। बिना भोगे इनसे छुटकारा नहीं हो सकता। इस प्रकार इस कर्मजाल व उनके भागों का कभी अंत हो ही नहीं सकता एवं बिना इनका अंत हुए मुक्ति की संभावना ही नहीं रहती। इन क्लेशों से रहित कर्म करने वाला नए कर्म संस्कार निर्मित नहीं करता किंतु इन क्लेशों के रहते जो भी कर्म किए जाएंगे उनका फल इस जन्म में तथा अगले जन्मों में अवश्य भोगना पड़ता है। इन अविध्यादी क्लेशों के रहने से ही वासनाएं पैदा होती हैं। यदि इसे जान लिया तो वासनाएं समाप्त हो जाती है अन्यथा इनके बीज रूप में रहने पर पुनः इनका विशाल वृक्ष बन जाता है। इसलिए इस कर्म संचय को रोकने का एकमात्र उपाय अविध्या का नाश ही है। साधक को इसी अविध्या के नाश का उपाय करना चाहिए जो इन क्लेशों का मूल है।

सूत्र 13-सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः।

अनुवाद-मूल के विध्यमान रहने तक उसके परिणाम स्वरूप जाति (पुनर्जन्म) आयु और भोग प्राप्त होते हैं।

व्याख्या-इसी से मनुष्य का पुनर्जन्म होता है, उसको एक निश्चित आयु प्राप्त होती है तथा उनके फलों को भोगना पड़ता है। यह क्रम अनेक जन्मो तक निरंतर चलता रहता है। सभी संचित कर्मों को यदि कोई एक ही जन्म में भोग ले तथा नए कर्म संचित न करें तो वह मुक्त हो सकता है किंतु ऐसा होता नहीं। पूर्व संचित कर्मों में थोड़े से ही एक जन्म में भोगने के लिए होते हैं। शेष अगले जन्मों के लिए सुरक्षित रहते हैं। अविध्या के रहने से नये कर्म संचित होते रहते हैं इसलिए कर्मों द्वारा कर्मों का क्षय कभी संभव नहीं है। ये अविध्या के नाश से ही संभव है जो बिना आत्मज्ञान प्राप्त किए नहीं हो सकता। अतएव साधक को आत्मज्ञान प्राप्त करके चित्त के लय से इस अविध्या का नाश करना चाहिए। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं है। कर्मों के परिणाम स्वरुप ही जीव विभिन्न जातियों (मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतंग आदि) में पुनः जन्म लेता है तथा वहां निश्चित आयु तक रहकर उन्हें भोगता है। इसी को प्रारब्ध कहते हैं। इन तीनों (जन्म, आयु, भोग) पर जीव का कोई अधिकार नहीं है किंतु कर्म पर मनुष्य का पूर्ण अधिकार है।

सूत्र 29-यम नियमाअसन प्राणायाम प्रत्याहार, धारणा ध्यान समाधयोऽष्टावङ्गानि।

अनुवाद-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये योग के आठ अंग हैं। व्याख्या-यम के सामने से बाह्य आचरण संबंधी सुधार होता है, नियमों से भीतर का सुधार होता है, आसनों से शरीर की शुद्धि होती है, प्राणायाम से स्वांस की शुद्धि होती है, प्रत्याहार से इंद्रियां शुद्ध होती हैं, धारणा से मन शुद्ध होता है, ध्यान से अस्मिता में सुधार होता है तथा समाधि में बुद्धि चित्त का सुधार होता है। इन सबकी शुद्धि से चित्त निर्मल होकर सत्य स्वरूप आत्मा का ज्ञान होता है।

सूत्र 36-सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाऽऽश्रयत्वम्।

अनुवाद-सत्य की दृढ़ स्थिति हो जाने पर उस योगी में क्रिया फल के आश्रय का भाव आ जाता है वह जो कहता है वह हो जाता है।

व्याख्या-इसी प्रकार योगी का जब सत्य भाव दृढ़ हो जाता है तो उसमें क्रिया फल के आश्रय का भाव आ जाता है। सत्य बोलने तथा उसके पालन में बड़ी

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

शक्ति निहित है इसीलिए अध्यात्म में सत्य पर काफी जोर दिया है। पुराणों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि ऋषि के शाप अथवा वरदान का फल देवताओं तक ने भुगता है। ऐसे व्यक्ति की वाचा सिद्धि हो जाती है। उसका वचन निष्फल नहीं जाता।

सूत्र 39-अपरिग्रहस्थैर्ये जन्मकथान्तासंबोधः।

अनुवाद-अपरिग्रह की स्थिति हो जाने पर पूर्व जन्म कैसे हुए थे इसका ज्ञान हो जाता है|

व्याख्या-यदि योगी की अपरिग्रह की स्थिति दृढ़ हो जाती है तो उसे पूर्व जन्मों का ज्ञान हो जाता है कि उसके पूर्व जन्म किस योनि में तथा कहां हुए थे तथा जन्म क्यों होता है। अपरिग्रह का अर्थ है इतना सादा जीवन जिससे वह भोजन, वस्त्र एवं निवास संबंधी न्यूनतम आवश्यकता ही पूरी करता है। पूर्व जन्मों का ज्ञान भीतर छिपी स्मृतियां ही हैं जो पुनः प्रत्यक्ष अनुभव में आ जाती है। ऐसा ज्ञान भी संसार से वैराग्य उत्पन्न करने वाला है कि यह सब कार्य जो इस जन्म में, मैं कर रहा हूं वह पूर्व जन्मों में अनेक बार कर चुका हूं|

विभूति पाद

सूत्र 16-परिणामात्रयसंयमादतीतानागतज्ञानम्।

अनुवाद-उक्त तीनों परिणामों में संयम करने से भूत और भविष्य का ज्ञान हो जाता है।

व्याख्या-इसी प्रकार योगी यह जानता है कि इस सृष्टि का मूल कारण क्या है? उसका किस प्रकार परिवर्तन होकर वह आज की स्थिति में पहुंची है तथा भविष्य में कितने समय बाद यह किस रूप को प्राप्त होगी? वैज्ञानिक अपने विभिन्न उपकरणों, तथ्यों, सूचनाओं आदि के द्वारा विभिन्न प्रयोग, परीक्षण करके यह ज्ञात करता है तथा योगी भी यह जानता है कि इन वस्तुओं में धर्म परिणाम, लक्षण परिणाम तथा अवस्था परिणाम से किस प्रकार परिवर्तन होता है। योगियों का ऐसा ज्ञान कोई जादुई चमत्कार जैसा नहीं है बल्कि एक वैज्ञानिक जैसा ही है। केवल जानने की विधि का अंतर है। वैज्ञानिकों के निर्णय परोक्ष साधनों पर आधारित है जिससे निष्कर्षों में त्रुटियां रह सकती हैं किंतु योगी प्रत्यक्ष अनुभव करके जानता है।

सूत्र 18-संस्कारसाक्षात्करणात् पूर्वजातिज्ञानम्।

अनुवाद-संयम द्वारा संस्कारों का साक्षात कर लेने से पूर्व जन्मों का ज्ञान हो जाता है|

व्याख्या-इस कर्मवाद के सिद्धांत के अनुसार मनुष्य अपने जीवन में जो भी अच्छे-बुरे कर्म करता है अथवा जिसका वह अनुभव करता है वह उसकी स्मृति में विध्यमान रहते हैं। मृत्यु के बाद भौतिक वस्तुएं तो सभी छूट जाती हैं किन्तु मन उस जीवात्मा के साथ रहता है जिसमें कर्मों की स्मृतियां रहती हैं। मृत्यु के बाद तथा पुनर्जन्म से पूर्व यह जीवात्मा एक निश्चित अवधि तक भटकती रहती है। यह समय उसका अंतराल का समय होता है। इस अवधि में इन स्मृतियों का न तो विकास होता है न क्षय होता है। यह स्मृतियां ही उस जीव के संस्कार कहलाते हैं जिनका अच्छा-बुरा फल भोगने के लिए उस जीव का पुनर्जन्म होता है। इन्हीं संस्कारों के फलस्वरूप उसे जन्म, आयु और भोग प्राप्त होते हैं तथा वर्तमान जीवन में वह जीव फिर नए कर्म करता है जिससे फिर नए संस्कार बनते हैं तथा पुरानों में से जिनको वह भोग लेता है वे समाप्त हो जाते हैं। इस प्रकार मनुष्य के कई जन्मों के संस्कार अंत:करण में विध्यमान रहते हैं जिनमें से कुछ को ही वह एक जन्म में भोगता है शेष अगले जन्मों में भोगने के लिए सुरक्षित रहते हैं। इन संस्कारों के भोगने का भी एक क्रम होता है। यदि कोई इसकी संपूर्ण कार्य विधि को जान लेता है तो वह सृष्टि के संपूर्ण रहस्यों को जान सकता है। मनुष्य का वर्तमान जीवन आवश्यक नहीं है कि इससे पूर्व जन्म का ही फल हो। इससे दस जन्म अथवा पचास जन्म पूर्व का फल भी हो सकता है। यह जन्म कौन से संस्कारों का परिणाम है तथा पिछला जन्म किन संस्कारों के उदय होने से कब एवं कहां हुआ? वर्तमान जीवन पूर्व जन्मों के संस्कारों का ही परिणाम है। योगी इन संस्कारों में संयम करके जान

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501

लेता है कि वह संस्कार पूर्व के किस जन्म के हैं। इन्हें जानकर वह उसके पूर्व जन्मों को जान लेता है। मनुष्य के वर्तमान जीवन के सभी कर्म, विचार, आचरण, रुचि आदि उसके पूर्व जन्मों के संस्कारों के ही कारण है। वर्तमान जीवन पूर्व जन्मों के फलस्वरुप ही मिला है जिसकी झलक उसके समस्त कार्यों व व्यवहारों में देखी जा सकती है।

सूत्र 19-प्रत्ययस्य परचित्तज्ञानम्।

अनुवाद-दूसरों की चित्तवृत्ति के संयम करने से उसके चित्त का ज्ञान हो जाता है।

व्याख्या-योगी पहले अपने चित्त की वृत्तियों के आधार पर उसका ज्ञान करता है। इसके बाद उसमें संयम की स्थिति आ जाती है। इसी संयम द्वारा वह जिसका भी चाहे ज्ञान कर सकता है। यदि ऐसा योगी किसी दूसरे की चित्तवृत्ति में संयम करता है तो उसे उसके चित्त का ज्ञान हो जाता है। इसके द्वारा वह दूसरे के भावों, विचारों, उसके जन्मों तथा उसके संस्कारों आदि का ज्ञान कर सकता है। दूसरे के चित्त का ज्ञान साक्षात उसकी वृतियों से ही हो सकता है। सीधा ज्ञान संभव नहीं है क्योंकि वह अत्यंत सूक्ष्म लिंग मात्र है, आभास स्वरुप ही है।

सूत्र 38-बन्धकारणशैथिल्यात्प्रचारसंवेदनाच्च चित्तस्य परशरीरावेशः।

अनुवाद- बंधन के कारण (कर्म संस्कार) की शिथिलता से और चित्त की गति का भली-भांति ज्ञान होने से चित्त का दूसरे के शरीर में प्रवेश किया जा सकता है।

व्याख्या-इसके ज्ञान से वह चित्त को अपने शरीर से बाहर निकाल कर शून्य में भ्रमण कर सकता है तथा दूसरे के शरीर में भी प्रवेश कर सकता है जिसे 'परकायाप्रवेश' कहते हैं। ऐसा प्रवेश मृत शरीर में ही संभव है जिसकी मृत्यु को अधिक समय न हुआ हो अन्यथा वह शरीर विकृत हो जाता है। शंकराचार्य का राजा सुधन्वा के शरीर में प्रवेश तो प्रसिद्ध है ही, किंतु अन्य योगियों के भी ऐसे उदाहरण मिलते हैं। जब किसी शरीर से चित्त को निकाला जाता है तो उस शरीर की रक्षा करना भी आवश्यक है जिससे वह विकृत न हो। यदि कोई योगी सदा के लिए दूसरे शरीर को जो ग्रहण करना चाहता है तो भी इस विधि से कर सकता है। इस प्रकार योगी हजारों वर्षों तक जीवित रह सकता है। परकाया प्रवेश की विधि हठयोग में दी गई है।

निष्कर्ष

मनुष्य का जीवन रहश्यमय है, व्यक्ति को लगता है की वह सब कुछ जानता है परन्तु ऐसा है नहीं, व्यक्ति को यह नहीं पता की वह आया कहाँ से है और मृत्यु के बाद वह कहाँ चला जायेगा। इस शोध से इतना तो आभाष हो ही जाता है की इस मानव शारीर में अद्भुत क्षमता है और वह चाहे तो अपने पिछले सभी जन्मों की जानकारी एकत्रित कर सकता है। योग सूत्र के अभ्यास से यह संभव भी है। जातक कथा, भविष्य पुराण, विष्णु पुराण, पांतजल योगसूत्र के अध्ययन से यह बात सिद्ध होती है की इस जन्म के जो भी मानव कर्म हैं वे पिछले जन्मों के कर्मों की ही प्रतिक्रिया है।

संदर्भ सूची

[1]. http://www.sacred-texts.com/bud/index.htm.
[2]. http://www.vedpuran.com.
[3]. भविष्य पुराण-गीताप्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित।
[4]. विष्णु पुराण-गीताप्रेस ,गोरखपुर से प्रकाशित।
[5]. पांतजल योगसूत्र-रणधीर प्रकाशन हरिद्वार, अनुवाद-श्री नन्दलाल दशोरा।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-3501